International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 47-50

लखनऊ शहर के मलिन बस्ती बस्तियों में नशा वृद्धि के कारण वाल अपराध व महिला अपराधों का सामाजिक अध्ययन

संतोष श्रीवास्तव[1], डॉ० श्रीनिवास मिश्र[2]
[1] शोध छात्र (समाजशास्त्र), अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक (समाजशास्त्र), शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र लखनऊ शहर के मलिन बस्तियों के मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप वाल अपराध में वृद्धि व नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराधों का सामाजिक अध्ययन पर आधारित है। इस शोध पत्र के माध्यम से मलिन बस्तियों के मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप वाल अपराध में वृद्धि व नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध आदि का अध्ययन शामिल किया गया है। शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप बाल अपराधों में वृद्धि और नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध में अपेक्षाकृत वृद्धि हुई है। दिनों दिन बढ़ते हुए अपराध हमारे सामाजिक जीवन के लिए एक चुनौती है। इस तरह मानव समाज में महिला एवं बाल अपराध एक बहुत बडी समस्या बन गये हैं। इससे हमारी समाज व्यवस्था ही सदोष नहीं बनती, उल्टे आने वाली योग्य और उत्तरदायी पीढ़ी का भी भविष्य अंधेरे में पड़ गया है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज के सभी हितचिन्तकों को, अभिभावकों को इस बुराई की ओर ध्यान देना चाहिए। बच्चों को केवल खिलाने–पिलाने या शिक्षा दिलाने में ही अपना कर्त्तव्य पूरा न समझ कर उन्हें अपराधी जीवन से बचायें रखना, बुराइयों में प्रवृत्त न होने देना भी आवश्यक है।

मूल शब्द : लखनऊ शहर, मलिन बस्ती, नशा वृद्धि, अपराध, सामाजिक अध्ययन।

प्रस्तावना
मलिन बस्ती से आशय गरीब श्रमिकों/मजदूरों के ऐसे शहरी आवास के स्थलों से लिया जाता है जहाँ बॉस, पॉलीथिन, टीन से निर्मित स्थायी एवं अस्थायी झोपड़ियों में अधिकांश लोग मूलभूत एवं आवश्यक नागरिक सेवाओं से वंचित होकर बदतर स्थितियों में जीवन निर्वाह करने को मजबूर हैं। इसे गंदी बस्ती, मलिन बस्ती आदि नामों से जाना जाता है।

मलिन बस्तियों की उत्पत्ति औद्योगिक क्रांति के पश्चात् शुरु हुई। इंगलैण्ड में औद्योगिक क्रांति होने के बाद यूरोप एवं विश्व के सभी राष्ट्रों में औद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरु हुई। नये कारखानों तथा भारी मशीनों के अविष्कारों से औद्योगीकरण की प्रक्रिया में तेजी आयी। स्पष्ट है कि इंगलैण्ड आद्योगिक क्रांति की जन्मदाता है इसलिए मलिन बस्तियों की उत्पत्ति सर्वप्रथम इंगलैण्ड से शुरु हुई क्योंकि कारखानों में काम करने के लिए जो मजदूर भारत एवं अन्य देशों से गये, वहाँ उनके लिए उचित आवास की व्यवस्था नहीं थी। उन मजदूरों को गंदे–बदबूदार एवं सीलन भरे छोटे–छोटे कमरों में रहना पड़ता था। इससे उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता था। ऐसे मजदूरों की कार्य की दशाएँ अनुकूल नहीं थी।

इंगलैण्ड की औद्योगिक क्रांति के बाद भारत में भी औद्योगीकरण शुरु हुआ। इससे औद्योगिक क्षेत्रों में श्रमिकों एवं मजदूरों की आवश्यकता हुई वहीं दूसरे ओर शहरी जीवन के लिए आवश्यक नागरिक सुविधाएँ/सेवाओं की अपूर्ति के लिए भी श्रमिकों एवं मजदूरों की मांग बढ़ी। इस प्रकार औद्योगिक क्षेत्रों में श्रमिकों की आवश्यकता तथा शहरों/नगरों में शहरी लोगों की आवश्यकताओं/सेवाओं की पूर्ति हेतु बड़ी संख्या में ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का शहरों में पलायन अथवा प्रवजन शुरु हुआ। इस तरह इन शहरी क्षेत्रों में झुग्गी–झोपड़ियों का चलन प्रारम्भ हुआ। ये झुग्गी–झोपड़ी स्थायी एवं अस्थायी दोनों ही रुपों में बनायी जाने लगी। इन झुग्गियों में निवास करने वाले अधिकांश लोग सामाजिक दृष्टि से हीन, अछूत एवं निम्न कार्य करने वाले होते हैं। इसीलिए शहरों के अन्तर्गत ही इनकी अलग बस्तियों में रहने का प्रबंध किया गया क्योंकि भारत में सामाजिक परंपराओं एवं मान्यताओं के अनुसार ऐसे लोग अछूत, हरिजन, आदिवासी एवं निम्न कार्य करने वाले की श्रेणी में आते थे जबकि वास्तव में ये लोग ग्रामीण समाज के कृशक एवं मजदूर वर्ग के होते हैं, जिनमें आदिवासियों की संख्या भी अधिक होती है क्योंकि आदिवासी समाज के लोग मेहनती, परिश्रमी होते हैं, इसलिए ऐसे औद्योगिक कारखानों में उनकी संख्या अधिक बढ़ी। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि वनसंख्या में आव्रजन से शहरों का निर्माण विकास एवं विस्तार हुआ है।

उद्देश्य
शोध अध्ययन के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप वाल अपराधों का अध्ययन।
2. शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध का अध्ययन।
3. मलिन बस्तियों में रह रहे बच्चों के माता–पिता अपने बच्चों की उचित देखभाल नही कर पाते जिसके कारण वे कई बाधाओं से ग्रसित हो जाते उनके चिकित्सा के लिए उपाया करना।

शोध परिकल्पना

शोध कार्य में परिकल्पना प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जिससे समस्या समाधान को उचित दिशा मिलती है। विज्ञान में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप वाल अपराधों में वृद्धि हुई है।
2. शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध में अपेक्षाकृत वृद्धि हुयी है।

शोध विधि

शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही प्रकार के समंकों का संकलन किया गया है। प्राथमिक समंक के संकलन हेतु अनुसूची/प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। मलिन बस्तियों के मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप वाल अपराध में वृद्धि व नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध से संबंधित प्रत्येक पहलू को शामिल किया गया है। प्रारंभिक सर्वेक्षण के आधार पर उपयुक्त अनुसूची का परीक्षण कर उसकी वास्तविकता एवं सार्थकता की जांच की गय। प्रस्तुत शोध कार्य उ.प्र. के लखनऊ शहर मलिन बस्तियों पर आधारित है। इसके अन्तर्गत लखनऊ शहर के मलिन बस्तियों को कुल छः जोन में विभक्त किया गया है। प्रत्येक जोन से 10 वार्ड एवं प्रत्येक वार्ड के पार्षद, आगनवाड़ी तथा 10–10 मलिन बस्तियों के लोगों का कुल 600 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार किया गया। एकत्रित किए गए प्राथमिक समंकों/स्त्रोतों में उच्च स्तर की शुद्धता प्राप्त करने के लिए प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान पद्धति का सहारा लिया गया है।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अंसारी (2000)[1], अरजू (1993)[2], कौर्य (1984)[3], कौशिक (2003)[4], गौरी (2013)[5], पाण्डेय, एस.एस. (2008)[6], मिश्रा सरस्वती (1996)[7], लवनिया, एम.एम. (2010)[8] और शर्मा, एस.एस. (1994)[9]

शोध का क्षेत्र – शोध का क्षेत्र सीमित है। प्रस्तुत शोध मलिन बस्तियों के मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप वाल अपराध में वृद्धि व नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध के विशेष संदर्भ से संबंधित है। इस प्रकार शोध प्रबंध लखनऊ शहर तक ही सीमित है। लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों का अध्ययन करके निष्कर्ष ज्ञात किए गये है। इन मलिन बस्ती निवासियों की मलिन बस्तियों के मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप वाल अपराध में वृद्धि व नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध आदि का अध्ययन किया गया है।

शोध का महत्व – शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल लखनऊ शहर वरन् सम्पूर्ण उ.प्र. के मलिन बस्तियों के मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप वाल अपराध में वृद्धि व नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध अध्ययन की वर्तमान स्थिति तथा उनमें आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन मलिन बस्तियों के मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप वाल अपराध में वृद्धि व नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध का अध्ययन कर कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा मलिन बस्ती के परिवारों में साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है। सारणी के विश्लेषण से जो तथ्य सामने आये है, वे निम्नलिखित है :–

सारणी 1 : शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप बाल अपराधों का अध्ययन

क्र.	जानकारी संकलन के स्रोत	न्यादर्श में चयनित संख्या	मलिन बस्तियों में मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप बाल अपराधों में					
			वृद्धि हुई है		नही हुई है		पता नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	मलिन बस्ती के अभिमतदाता	600	487	81.17	57	9.50	56	9.33
2.	पार्षद	60	53	88.33	3	5.00	4	6.67
3.	आंगनवाड़ी	60	49	81.67	5	8.33	6	10.00
योग–		720	589	81.81	65	9.03	66	9.17

सारणी 2: काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	हाँ	नहीं	पता नही
F_o	589	65	66
F_e	240.00	240.00	240.00
F_o-F_e	349.00	-175.00	-174.00
$(F_o-F_e)^2$	121801.00	30625.00	30276.00
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	507.50	127.60	126.15

$$x^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

$x^2 = 761.26$

df = (r-1)(c-1)

df = (3-1)(3-1)

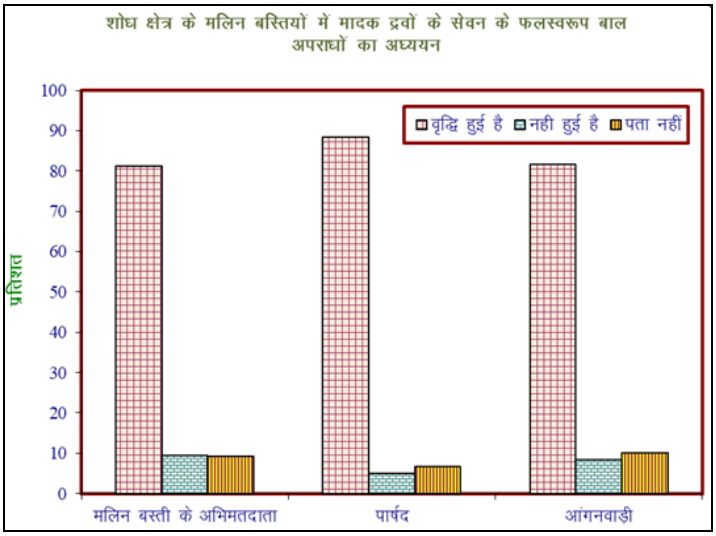

आकृति 1

विष्लेषण : शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप बाल अपराधों में वृद्धि हुई के बारे में जानकारी का संकलन कर काई वर्ग द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। गणना द्वारा x^2 का मान 4df 761.26 है, जबकि तालिकामान 4df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर क्रमशः 5.99 व 9.21 है। गणना द्वारा प्राप्त मान उपरोक्त दोनों के मान से बहुत अधिक है। अर्थात् शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप बाल अपराधों में वृद्धि हुई है।

व्याख्या : सारणी एवं काई वर्ग द्वारा संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश मलिन बस्ती के अभिमतदाता, पार्षद एवं आंगनवाड़ी के अभिमतदाताओं का यह मानना हैं कि शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप बाल अपराधों में वृद्धि हुई है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

सारणी 3: शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध का अध्ययन

क्र.	जानकारी संकलन के स्रोत	न्यादर्श में चयनित संख्या	मलिन बस्तियों में नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध में अपेक्षाकृत वृद्धि					
			हुई है		नही हुई है		पता नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	मलिन बस्ती के अभिमतदाता	600	470	78.83	70	11.67	60	10.00
2.	पार्षद	60	56	93.33	1	1.67	3	5.00
3.	आंगनवाड़ी	60	46	76.67	7	11.67	7	11.67
योग–		720	572	79.44	78	10.83	70	9.72

सारणी 4: काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	हाँ	नहीं	पता नही
F_o	572	78	70
F_e	240.00	240.00	240.00
F_o-F_e	332.00	-162.00	-170.00
$(F_o-F_e)^2$	110224.00	26244.00	28900.00
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	459.27	109.35	120.42

$$x^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

$x^2 = 689.03$

df = (r-1)(c-1)

df = (3-1)(3-1)

df = 4

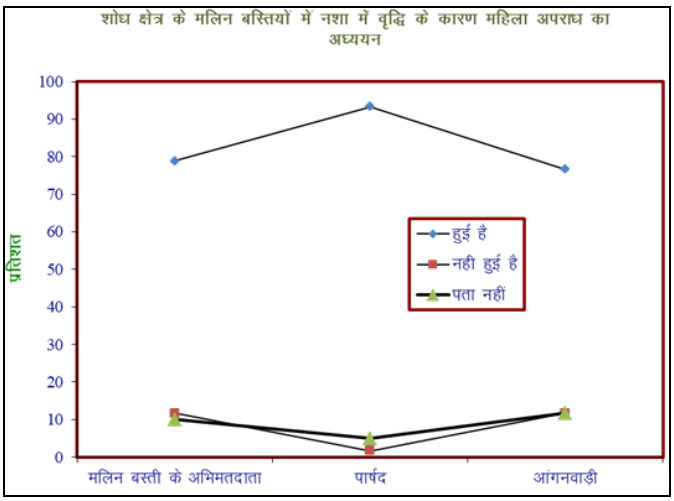

आकृति 1

विष्लेषण : शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध में अपेक्षाकृत वृद्धि हुई के बारे में जानकारी का संकलन कर काई वर्ग द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। गणना द्वारा x^2 का मान 4df 689.03 है, जबकि तालिकामान 4df पर क्रमशः 5.99 व 9.21 है। गणना द्वारा प्राप्त मान उपरोक्त दोनों के मान से बहुत अधिक है। अर्थात् शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध में अपेक्षाकृत वृद्धि हुई है।

व्याख्या : सारणी एवं काई वर्ग द्वारा संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश मलिन बस्ती के अभिमतदाता, पार्षद एवं आंगनवाड़ी के अभिमतदाताओं का यह मानना हैं कि शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध में अपेक्षाकृत वृद्धि हुई है।

अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

लखनऊ शहर में निवासरत मजिल बस्ती में अधिकांश गरीब, निर्धन, पिछड़ी सामाजिक समुदाय से हैं। इन मलिन बस्तियों में मुख्यरुप से क्षेत्रीय समूह गतिशीलता एवं अन्तः व्यवसायी गतिशीलता अधिक दिखाई देती है।

मानसिक स्थिति को बदल देने वाले रसायन, जो किसी को नींद या नशे की हालत में ला दे, उन्हें नारकॉटिक्स या ड्रग्स कहा जाता हे। मॉर्फिन, कोडेन, मेथाडोन आदि इस कैटिगरी में आते हैं। नशा करने के लिए लोग आमतौर पर शुरुआत में कफ सिरप और भांग आदि का इस्तेमाल करते हैं और धीरे–धीरे चरस, गांजा, अफीम, ब्राउन शुगर आदि लेने लगते है। मेरे विचार में कोई भी चीज जिसकी शरीर को जरूरत महसूस होती है और जिससे शरीर को तकलीफ महसूस हो, उसे नशा कहते है। नशा खाने के बाद क्या आंखे लाल, जबान तुतलाना, पसीना, गुस्सैल या अतिरिक्त खुशी, पैर लड़खड़ाना तकलीफ के लक्षण शरीर टूटना, नींद–भूख कम होना।

क्या करें बच्चों के माता–पिता बी बजाए दोस्त बनें। नशों के बारे में सही जानकारी दें। बच्चों की रुचि व क्षमता के मुताबिक पढ़ाई कराएं। घर आने–जाने वालों, दोस्तों, शौक व दिलचस्पी का ध्यान रखें।

किशोरावस्था में व्यक्तित्व के निर्माण तथा व्यवहार के निर्धारण में वातावरण का बहुत हाथ होता है। अतः अपने उचित या अनुचित व्यवहार के लिये किशोर बालक स्यं नहीं वरन् उसका वातावरण उत्तरदायी होता है। इस कारण अनेक देशों में किशोर अपराधों का अलग न्यायाविधान है, उनके न्यायाधीश एवं अन्य न्यायाधिकारी बालमनेविज्ञान के जानकार होते है। वहाँ बाल अपराधियों को दंड नहीं दिया जाता, बल्कि उनके जीवनवृत्त के आधार पर उनका तथा उनके वातावरण का अध्ययन करके वातावरण में स्थित असंतोषजनक, फलतः अपराधों को जन्म देने वाले, तत्वों में सुधार करके बच्चों के सुधार का प्रयत्न किया जाता है।

शोध क्षेत्र के मलिन बस्तियों में मादक द्रवों के सेवन के फलस्वरूप बाल अपराधों में वृद्धि और नशा में वृद्धि के कारण महिला अपराध में अपेक्षाकृत वृद्धि हुई है।

सन्दर्भ

1. अंसारी, एम.ए. राष्ट्रीय आयोग एवं भारतीय नारी, 2000, ज्योति प्रकाशन, जयपुर।
2. अरजू एम.एच. भारतीय महिला और आधुनिकीकरण, कामनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1993।
3. कौर्य इन्द्रजीत, भारतीय महिलाओं की स्थिति, 1984 नई दिल्ली।
4. कौशिक ए., नारी सशक्तिकरण : विमर्श एवं यथार्थ, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर 2003।
5. गौरी डॉ कृष्ण चंद्र, ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, अगस्त 2013, प्रकाशक, 'ए' विंग गेट 5; निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011।
6. पाण्डेय, एस.एस. – समाजशास्त्र, टी.एम.एच. प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।
7. मिश्रा सरस्वती– भारतीय स्त्रियों की प्रस्थिति, शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1996।
8. लवनिया, एम.एम. – भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र– रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, 2010।
9. शर्मा, एस.एस. – सामाजिक परिवर्तन– स्वरूप एंड सन्स प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994।